एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 05, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2025)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

भारतीय कृषि एवं वैदिक ज्योतिष: एक प्राचीन एवं अनोखा गठबंधन

डॉ. रमेश कुमार शर्मा, *डॉ. अंकेश कुमार चंचल, इं. मनीष कुमार एवं डॉ. आरती कुमारी

नालन्दा उद्यान महाविद्यालय, नूरसराय, नालन्दा (बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर)

*संवादी लेखक का ईमेल पता: ankeshchanchal@gmail.com

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ की अर्थव्यवस्था का आधार लंबे समय तक कृषि रहा है। भारतीय किसान सदियों से प्रकृति पर निर्भर होकर खेती करता आया है। इसी प्रकृति की लय को समझने के लिए हमारे पूर्वजों ने ज्योतिष शास्त्र का सहारा लिया, जो कालगणना और खगोलीय घटनाओं के आधार पर कृषि के विभिन्न कार्यों का मार्गदर्शन करता है। भारत में खेती ऋतुओं, नदियों और मौसम पर आधारित है। यहाँ की कृषि मानसूनी वर्षा पर निर्भर रही है। बीज बोने से लेकर फसल काटने तक, हर कार्य का समय प्रकृति और पंचांग के अनुसार तय किया जाता था। भारतीय कृषि और ज्योतिष शास्त्र का संबंध प्राचीन काल से बहुत गहरा रहा है। भारतीय संस्कृति में कृषि केवल एक आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि एक धार्मिक और खगोलीय गतिविधि भी रही है। वैदिक ज्योतिष उपवेद है जिसे "वेद की आँख" कहा गया है तथा कृषि भारतवर्ष की रीढ़ है । दोनों में प्राचीन काल से ही चोली-दामन का संबंध रहा है। प्राचीन काल मे कृषि आधारित सारी गतिविधियां ज्योतिष शास्त्रानुसार ही संपादित की जाती थी लेकिन आज के इस आधुनिक युग मे मौसम विज्ञान से संबन्धित उपकरणों के विकास ने इस संबंध मे एक क्रांतिकारी पहल की है । परंतु आज भी सुदूर ग्रामीण इलाकों के किसान ज्योतिष शास्त्र पर आधारित गणनाओं का सटीकता के साथ उपयोग कर रहे हैं और इससे लाभान्वित हो रहे हैं। यहाँ पर हम इस संबंध को विभिन्न पहलुओं से समझ सकते हैं:

भारतीय कृषि का परिचय

भारत एक कृषि प्रधान देश है तथा भारत की अधिकांश जनसंख्या पारंपरिक रूप से कृषि पर निर्भर रही है। भारत की जलवायु, ऋतुएँ और भौगोलिक विविधता इसे कृषि के लिए अनुकूल बनाती हैं।

ज्योतिष शास्त्र क्या है?

ज्योतिष शास्त्र भारतीय वेदों से उत्पन्न एक विद्या है जिसमें ग्रह-नक्षत्रों की गति और प्रभावों के आधार पर मानव जीवन और पृथ्वी पर होने वाली घटनाओं का अध्ययन किया जाता है। ज्योतिष शास्त्र वैदिक ज्ञान की एक शाखा है जिसमें ग्रह-नक्षत्रों की गति, तिथि, वार, योग आदि के आधार पर पृथ्वी पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। यह केवल भविष्यवाणी तक सीमित नहीं, बल्कि मौसम, वर्षा और कृषि के पूर्वानुमान का भी माध्यम रहा है। ज्योतिष शास्त्रानुसार बारह (12) राशियाँ एवं बारह (12) लग्न हैं तथा नौ ग्रह एवं सताईस (27) नक्षत्र हैं, जिनके आधार पर ज्योतिष संबन्धित गणनाएँ की जाती हैं। मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ एवं मीन - ये बारह राशियाँ हैं तथा इन्हीं के नामों पर ही लग्न का भी नामकरण होता है । नौ ग्रह का क्रम इसप्रकार है – सूर्य, चंद्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु एवं शुक्र। सत्ताइस (27) नक्षत्र ये हैं – अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद एवं रेवती। कुल हिन्दी माह बारह (12) होते हैं जिन्हें 15 -15 दिनों के दो पक्षों में बांटा गया हैं – शुक्ल पक्ष एवं कृष्ण

पक्ष। शुक्ल पक्ष की अंतिम तिथि पुर्णिमा एवं कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि अमावश्या होती है । इनके अलावा करण, योग एवं वैदिक वारों (रविवार, सोमवार .....) की भी ज्योतिष संबन्धित गणनाओं में अत्यधिक महत्ता है । वार, तिथि, नक्षत्र, करण एवं योग- इन पांचों के सम्मलित अध्ययन को ही पंचांग (पाँच+अंग) कहते हैं । महर्षि पाराशर एवं जैमिनी ऋषि द्वारा प्रतिपादित ज्योतिषीय सूत्र आदिकाल से आज तक प्रासंगिक बने हुए हैं ।

कृषि और ज्योतिष के बीच संबंध

1. ऋतु निर्धारण:

भारतीय पंचांग और ज्योतिष के आधार पर ही वर्षा ऋतु, शरद ऋतु, वसंत ऋतु आदि का पूर्वानुमान किया जाता है। यह कृषि में बीज बोने, रोपाई और कटाई के लिए अत्यंत आवश्यक होता है। भारतीय पंचांग में वर्ष को छह ऋतुओं में विभाजित किया गया है – बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, और शिशिर। प्रत्येक ऋतु के अनुसार अलग-अलग फसलें उगाई जाती हैं। ऋतुओं के परिवर्तन का निर्धारण ग्रहों और नक्षत्रों की चाल से होता है।

2. नक्षत्र और बीज बोना:

- कुछ विशिष्ट नक्षत्रों को बीज बोने के लिए शुभ माना जाता है, जैसे रोहिणी, **मृगशिरा**, **पुष्य**, हस्त, **श्रवण**।
- उदाहरण: पुष्य नक्षत्र में बीज बोने से फसल की वृद्धि अच्छी मानी जाती है।
- इन नक्षत्रों में बोया गया बीज अधिक उपज और पौष्टिकता देता है।

3. वार्षिक पंचांग और कृषि कार्य:

- पारंपरिक किसान आज भी पंचांग देखकर कृषि कार्य करते हैं। जैसे – *अमावस्या* को खेत में हल चलाना अशुभ माना जाता है, जबकि *शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र* में बीज बोना शुभ।
- भारतीय किसान पंचांग देखकर ही कृषि कार्य करते हैं — किस तिथि को हल चलाना, किस दिन फसल काटना, आदि।
- 'अमावस्या' या 'पूर्णिमा' जैसे विशेष दिनों में कुछ कार्य वर्जित माने जाते हैं।

4. ग्रहों का प्रभाव:

- शनि, राहु, केतु जैसे ग्रहों को कृषि में बाधा लाने वाला माना गया है।
- गुरु और चंद्रमा को शुभ प्रभाव देने वाला।

ज्योतिष में यह माना जाता है कि कुछ ग्रहों की स्थिति फसल पर प्रभाव डालती है। जैसे:

- **शनि** – सूखा या देरी से वर्षा।
- **गुरु (बृहस्पति)** – अनुकूल वर्षा व फसल वृद्धि।
- **राहु-केतु** – कीट-पतंगों का प्रकोप।

5. वर्षा पूर्वानुमान (वरुण ज्योतिष):

- भारत में वर्षा पूर्वानुमान हेतु 'वरुण ज्योतिष' या 'मेघ शास्त्र' का उपयोग होता था। किसान चंद्रमा की कलाओं, आकाश में बादलों की स्थिति, हवा की दिशा और सूर्य की चाल देखकर अनुमान लगाते थे कि वर्षा कब और कितनी होगी।
- पारंपरिक किसान आज भी चंद्रमा की कलाओं, इंद्रधनुष, बादलों की दिशा आदि को देखकर मानसून का अनुमान लगाते हैं। इसे **"वरुण ज्योतिष"** या **"मेघ शास्त्र"** कहा जाता है।

वेदों और कृषि-ज्योतिष का संबंध

- **अथर्ववेद** और **ऋग्वेद** में वर्षा, कृषि एवं प्रकृति से जुड़े अनेक मंत्र और सूक्त हैं।
- यज्ञ और हवन के द्वारा वर्षा की कामना की जाती थी, जिससे कृषि उपज बढ़े।
- **अथर्ववेद** में वर्षा के मंत्र मिलते हैं जो कृषि की उन्नति के लिए प्रयोग होते थे।
- **ऋग्वेद** में यज्ञों द्वारा वर्षा लाने की प्रक्रिया वर्णित है।
- प्राचीन ग्रंथ **'बृहत्संहिता'** में वराहमिहिर ने कृषि और खगोलशास्त्र का संबंध विस्तार से समझाया है।

कृषि मे उपयोगी विभिन्न नक्षत्र एवं मुहूर्त

भारतीय कृषि परंपरा में नक्षत्र और मुहूर्त का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यह विश्वास है कि यदि बीज बोना, रोपाई, कटाई आदि कार्य शुभ नक्षत्रों और मुहूर्त में किए जाएँ, तो फसल उत्तम, रोगमुक्त और अधिक उपज देने वाली होती है। नीचे कृषि में उपयोगी प्रमुख नक्षत्रों और मुहूर्तों की सूची दी जा रही है:

कृषि में उपयोगी नक्षत्र

नक्षत्र का नाम	कृषि कार्य में उपयोगिता
रोहिणी	बीज बोने और रोपाई के लिए अति शुभ। भूमि उर्वर होती है।
मृगशिरा	अनाज एवं दलहनों की खेती के लिए श्रेष्ठ। वर्षा का संकेत भी देता है।
आर्द्रा	भूमि की गहराई में नमी लाने वाला नक्षत्र; रोपाई हेतु उपयुक्त।
पुष्य	हर प्रकार की खेती के लिए शुभ; विशेषकर बीज बोने में श्रेष्ठ।
श्रवण	धान, गेहूँ जैसी फसलों के लिए अच्छा समय देता है।
हस्त	फसल की कटाई और अनाज संग्रह के लिए शुभ।
अनूराधा	बागवानी, फूलों और सब्जियों की खेती के लिए उपयुक्त।
स्वाति	वायुमंडलीय परिवर्तन सूचक, फलों और तिलहन की फसल के लिए अच्छा।
उत्तराफाल्गुनी	फसल बोने व वर्षा की संभावना में लाभकारी।
उत्तराभाद्रपद	भूमि की उर्वरता बढ़ाने वाला, जैविक खेती हेतु उपयुक्त।

कृषि में शुभ मुहूर्त (कार्य के अनुसार)

कृषि कार्य	शुभ मुहूर्त (तिथि/वार/नक्षत्र आदि)
हल चलाना / खेत की तैयारी	कृष्ण पक्ष से बचें; शुक्ल पक्ष में हस्त, रोहिणी या पुष्य नक्षत्र में करें।
बीज बोना (बुवाई)	रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, श्रवण नक्षत्र में शुभ।
रोपाई / पौधारोपण	स्वाति, अनुराधा, पुनर्वसू, आर्द्रा नक्षत्र में अच्छा फल मिलता है।
कटाई / फसल संग्रह	हस्त, चित्रा, अश्विनी, रेवती नक्षत्र में शुभ माने जाते हैं।
खेत की सफाई / खरपतवार नियंत्रण	कृष्ण पक्ष के अंतिम दिनों में करना उचित।
गोबर खाद डालना	शुक्ल पक्ष में रविवार, मंगलवार या बृहस्पतिवार को करें।
यंत्र (ट्रैक्टर/हल) पूजा व प्रारंभ	विजयादशमी, अक्षय तृतीया, या किसी भी अभिजीत मुहूर्त में।

अभिजीत मुहूर्त

– यह एक ऐसा मुहूर्त है जो लगभग हर दिन दोपहर में एक विशेष अवधि में आता है। इसे **सभी कार्यों के लिए शुभ** माना जाता है, विशेषकर जब अन्य मुहूर्त ज्ञात न हों। प्राय: प्रतिदिन दिन मे 11.34 से 12.24 की अवधि अभिजीत मुहूर्त कहलाती है जो कि अत्यंत ही शुभ मानी जाती है ।

कुछ पारंपरिक कहावतें

1. **"मृगशिरा में करे बुवाई, खेत से दौलत आए भाई!"**
2. **"पुष्य में बोया बीज, हर हाल में सफल होई।"**

भारतीय कृषि एवं ज्योतिष आधारित कहावतें

भारतीय ग्रामीण समाज में कृषि और ज्योतिष को लेकर अनेक परंपरागत कहावतें (लोकोक्तियाँ) प्रचलित हैं। ये कहावतें किसानों के अनुभव, प्रकृति के व्यवहार और खगोलीय घटनाओं पर आधारित होती हैं। इनका उपयोग वर्षा, फसल की बुआई, कटाई और मौसम के पूर्वानुमान के लिए किया जाता रहा है।

नीचे कुछ प्रसिद्ध और उपयोगी कहावतें दी जा रही हैं, जो कृषि और ज्योतिष के संबंध को उजागर करती हैं:

भारतीय कृषि एवं ज्योतिष आधारित कहावतें

कहावत	अर्थ / व्याख्या
"अषाढ़ सुदिन, बियावै बुद्धिन"	अषाढ़ माह के शुभ दिन (विशेषकर पुष्य नक्षत्र) में बुआई करें, फलदायी होती है।
"पुष्य में बीज बोये, फल सदा ही खोये ना।"	पुष्य नक्षत्र में बुआई शुभ मानी जाती है, इससे उपज अच्छी होती है।

"जेठ चढ़े अदितवार, बरखा होय अति अपार।"	यदि जेठ माह में रविवार को सूर्य तेज हो, तो बारिश अधिक होने की संभावना है।
"तीजै पूरनमासी, बरखा होय रासी-रासी।"	तीसरे दिन पूर्णिमा आए, तो भरपूर वर्षा होती है।
"सावन सुक्ल पचौरा होय, तो धन धान्य भरा होय।"	सावन माह के शुक्ल पक्ष में पचौरा हो (पंचमी या चतुर्थी), तो फसलें अच्छी होती हैं।
"भादों बीते न पूस रोपे, खेत पड़े गोबर ढोवे।"	यदि भाद्रपद (भादों) के बाद बुआई हो, तो फसल खराब होती है और मेहनत बेकार जाती है।
"रोहिणी बरसे नव दिन, नीर भरै धरती।"	यदि रोहिणी नक्षत्र में लगातार 9 दिन वर्षा हो, तो वर्षा पर्याप्त मानी जाती है।
"आषाढ़ में बादल गरजे, किसान के मन हरषे।"	आषाढ़ मास में गरजने वाले बादल वर्षा का संकेत देते हैं, जिससे किसान प्रसन्न होता है।
"कर्क लगन जो बरसे पानी, धन-धान्य भरे घर-द्वारी।"	यदि कर्क लग्न में वर्षा हो, तो संपत्ति और अन्न की भरमार होती है।
"पूस की सर्दी, माघ की धूप – फसल को दे उत्तम रूप।"	यदि पौष में ठंड और माघ में धूप हो, तो गेहूँ आदि रबी फसलें अच्छी होती हैं।

इन कहावतों की विशेषताएँ

- इनमें **नक्षत्र**, **मास**, **वार**, **लग्न**, और **तिथि** का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।
- ये कहावतें **लोक विज्ञान** (Folk Science) का उदाहरण हैं।
- ये किसान को **प्राकृतिक संकेत** पढ़ने की परंपरा से जोड़ती हैं।

ऐतिहासिक उदाहरण

- राजा विक्रमादित्य और चाणक्य जैसे विद्वान राजाओं के काल में कृषि नीति ज्योतिष के आधार पर बनाई जाती थी।
- **वराहमिहिर** (6वीं सदी के ज्योतिर्विद) ने *"बृहत्संहिता"* में कृषि, वर्षा, ग्रहण आदि का गहरा अध्ययन किया है।

आधुनिक संदर्भ में

हालाँकि आधुनिक विज्ञान ने मौसम पूर्वानुमान के लिए तकनीकें दी हैं, परन्तु ग्रामीण भारत में आज भी कई किसान पारंपरिक ज्योतिषीय तरीकों को मानते हैं, विशेषकर जब वैज्ञानिक साधन उपलब्ध न हों। आज विज्ञान और तकनीक के युग में भी ग्रामीण क्षेत्रों में पंचांग और नक्षत्रों के अनुसार खेती की परंपरा जीवित है। मौसम विभाग के आधुनिक पूर्वानुमानों के साथ परंपरागत ज्योतिषीय ज्ञान को जोड़ने पर और भी सटीक निष्कर्ष मिल सकते हैं।

निष्कर्ष

भारतीय कृषि और ज्योतिष शास्त्र का संबंध परंपरा, अनुभव और प्रकृति के गहरे ज्ञान पर आधारित रहा है। यह केवल विश्वास नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक दृष्टिकोण भी है जो हजारों वर्षों की अनुभवजन्य परंपरा पर टिका है। भारतीय कृषि में नक्षत्र और मुहूर्त केवल धार्मिक मान्यता नहीं बल्कि अनुभवजन्य ज्ञान पर आधारित रहे हैं। जब मौसम वैज्ञानिक उपकरण नहीं थे, तब ये खगोलीय गणनाएँ ही कृषि कार्य का मार्गदर्शन करती थीं। आज भी पारंपरिक किसान इन पर विश्वास करते हैं और लाभ भी उठाते हैं।

भारतीय कृषि परंपरा में उपरोक्त कहावतें केवल मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि पीढ़ियों से संचित अनुभवजन्य मौसम विज्ञान और ज्योतिषीय ज्ञान का सार रही हैं। इनका आज भी ग्रामीण भारत में उपयोग होता है — विशेषकर वहाँ जहाँ आधुनिक मौसम पूर्वानुमान पहुँच से दूर हैं।